JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में मद्यपान का इतिहास

डॉ0 तेज प्रताप सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
राष्ट्रीय पी0जी0 कालेज जमुहाई, जौनपुर।

सारांश

मादक द्रव्यों का सेवन इतिहास के प्रत्येक काल व विश्वभर के सभी क्षेत्रों में होता आया है। प्राचीन समय में भी इनका प्रयोग किया जाता था लेकिन समय के साथ–साथ मादक द्रव्यों की प्रकृति व सेवन की प्रवृत्ति में अत्यधिक परिवर्तन आये हैं। क्षेत्रीय आधार पर भी यह परिवर्तन आसानी से देखा जा सकता है। भारत भी मादक द्रव्यों को हमेशा ही हतोत्साहित करने का प्रयास किया गया है परन्तु वर्तमान में इनका प्रयोग व्यापक स्तर पर होने लगा है तथा मादक द्रव्यों के प्रति जन–सामान्य की धारणा बदल रही है, जो समाज व सरकार के लिए चिंता का विषय है।

शब्द कुंजीः– पारिवारिक, निर्धनता, अवसाद, समाज, सामाजिक, आर्थिक

प्रस्तावनाः–

मादक द्रव्य सेवन सदियों से प्रचलित है। विश्य की विभिन्न संस्कृतियों में हजारों वर्ष पूर्व भी मादक द्रव्य व इनके सेवन के साक्ष्य मिलते हैं। सर्वप्रथम मादक द्रव्यों का प्रयोग कब और कहाँ किया गया, इसकी कोई पुख्ता जानकारी नहीं है। मादक द्रव्यों का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितनी प्राचीन मानव सभयता है। विश्व के अलग–अलग भागों में अलग–अलग नशीले पदार्थों का उपयोग होता रहा है। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि सबसे पहले प्राकृतिक रूप से पाये जाने वाले मादक द्रव्यों का प्रयोग हुआ होगा। उसके बाद उन प्राकृतिक औषधियों के संश्लेषण द्वारा अन्य

मादक दव्य निर्मित किए गए। प्राचीन प्रमाणों से ऐसे साक्ष्य प्राप्त होते है कि प्रारम्भ में विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों व उनकी पत्तियों को उबालकर रस बनाया जाता था।[1]

अफीम को मादक द्रव्यों का राजा कहा जाता है। अफीम का प्राचीनतम विवरण 5000 ईस्वी पूर्व सुमेर सभ्यता में मिलता है जहाँ इसको खुशी का पौधा (हुलगिल) बताया गया है। आज से चार हजार साल पहले मिश्र की सभ्यता में भी अफीम का प्रयोग दर्द निवारक तथा बच्चों को नींद दिलाने के लिए किया जाता था। कुरान में सुरापान को निषेध किया गया है, इस निषेध के कारण मुस्लिम लोग अफीमची बन गए। इसाई धर्मग्रन्थों में भी अफीम का वर्णन मिलता है। ईसा से पूर्व चिकित्सकों व कवियों ने इसकी चर्चा की है। 4000 ईसा पूर्व मेसोपोटामिया सभ्यता में शराब के प्रयोग के साक्ष्य मिलते हैं। चीन में 5000 वर्ष पूर्व में कैनाबिस का प्रयोग किया जाता था। कोकिन व तम्बाकू की शुरूआत दक्षिण अमेरिका महाद्वीप से मानी जाती है। भारत में तम्बाकू की शुरूआत 1608 में हो जाती है जब पुर्तगाली व्यापारी इसे लेकर भारत आये थे।

भारत में मादक द्रव्य के उपयोग की शुरूआत अति प्राचीन काल से हो चुकी थी। भारत के लगभग सभी प्राचीन ग्रंथों में मादक द्रव्यों के सम्बन्ध में अनेक उदाहरण मिलते हैं। इनमें मादक पदार्थों विशेष रूप से शराब को अलग–अलग नामों यथा मद्य, आसव, सोमरस, मधु, मादक, फलाम्स, मेदक, मध्यासव आदि। वैदिक काल से पूर्व मद्यपान निषेध था, स्मृतियों में इसका उत्पादन व प्रयोग का विवरण मिलता है। मनुस्मृतियों में ब्राह्मणों के लिए मदिरा स्पर्श हत्या के समान था। चरकसंहिता में मादक द्रव्यों द्वारा रोगों के इलाज की जानकारी मिलती है लेकिन साथ ही इसके अत्यधिक सेवन के प्रति आगाह भी किया गया।

मदिरा सेवक से व्यक्ति पथभ्रष्ट होकर बेहोशी, शोक, क्रोध, मूर्छा आदि रोगों का शिकार हो जाता है। ऐसा माना जाता है कि सतयुग में देवताओ द्वारा इनका सेवन किया जाता था। इन्द्र, अग्नि आदि देवता सोमरस का सेवन करते थे तथा यज्ञ में भी सोम की आहूति दी जाती थी। कुछ देवी देवताओं को सुरा प्रसाद के रूप में चढ़ाई जाती थी इसके उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। आज भी काली माता तथा भैरव बाबा के मन्दिरों में शराब का चढ़ावा आम बात है। यह विवाद का विषय रहा है कि उस समय का सोमरस आज की शराब है या नहीं, लेकिन ये सच्चाई है कि कुछ देवी–देवताओं को शराब का भोग आज भी लगाया जाता है। कुछ सोम व सुरा को अलग–अलग माते हैं जिसमें सुरा सामान्य लोगों का पेय था जबकि सोमरस देवताओं का पेय जाना गया है।

प्राचीन ग्रंथों, वेद, पुराण, उपनिषद् आदि में सुरा पान व मादक द्रव्यों के सेवन करने वालों की आलोचना की गई है जो इस बात को सिद्ध करती है उस समय भी शराब का सेवन होता था। अथर्ववेद में मद्यपान को मांस भक्षण व वेश्यागमन के समान अपराध माना गया है। मनुस्मृति में भी शराब को दण्डनीय अपराध माना गया है। रामायण व महाभारत काल में मदिरा सेवन होता था। बौद्ध व जैन साहित्यों में मादक द्रव्यों की तीव्र आलोचना की गई है। जैन धर्म में श्रावकों के लिए मदिरापान वर्जित था।[2]

मदिरा के घड़े में आठ अवगुण यथाः मादकता, सुस्ती, कलह, निद्रा, बुद्धि का विनाश, धर्म का पतन, सुख का नाश, नरक का रास्ता आदि भरे हैं। कुछ विदेशी यात्रियों ने भारत में मादक द्रव्य सम्बन्धी साक्ष्य दिये हैं। तीसरी शताब्दी में चीनी यात्री फाह्यान तथा उसके बाद चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी भारत में मादक द्रव्यों के कम प्रयोग के संकेत दिये हैं। इन यात्रियों के अनुसार भारत में मादक द्रव्यों का उपयोग बहुत कम होता है। जो यह दर्शाता है कि चीन के मुकाबले भारत में मादक द्रव्य का उपयोग बहुत कम होता है।

मध्य युग में अफीम व शराब सेवन का प्रयोग अधिक होने लगा था विशेषकर शासक वर्ग में। समय समय के राजाओं, सामंतो द्वारा मादक द्रव्यों का भरपूर सेवन किया जाता था लेकिन इस समय सामान्य जनता द्वारा इनके ज्यादा उपयोग की जानकारी प्राप्त नहीं होती है। मुस्लिम शासको के आगमन के बाद मादक द्रव्यों के उपयोग में वृद्धि हुई। इस्लाम में शराब का प्रयोग निषेध होने के बावजूद भी खूब प्रयोग किया जाता है। मध्य गुग के कुछ बादशाह भोग विलास में अपना जीवन यापन करते थे तथा कई बार उनकी मृत्यु का कारण भी अत्यधिक सुरापान होता था। जहांगीर मदिरापान व अफीम का व्यसनी था उनके भाइयों मुराद व दानियाल की मृत्यु अत्यधिक शराब पीने के कारण हुई। इस युग में भी मादक द्रव्यों को एक समस्या के रूप में लिया जाता था तथा इस पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगाए गए थे।[3]

अंग्रेजों के आगमन के बाद भारत में मादक द्रव्य के प्रति नजरिया परिवर्तित होने लगा। इससे पहले मादक द्रव्यों का विस्तार उच्च वर्ग व शासक वर्ग में था तथा धार्मिक प्रतिबन्धों के कारण आमजन द्वारा इनका खुलेआम प्रयोग नहीं होता था लेकिन अंग्रेजों ने इसे प्रतिष्ठा की वस्तु बना दिया। इसके दो कारण प्रमुख थे पहला कारण था कि अंग्रेज स्वयं शराब का अत्यधिक सेवन करते थे, दूसरा कारण है कि उनका उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा आर्थिक लाभ प्राप्त करना था। आर्थिक लाभ

प्राप्ति के लिए ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सर्वप्रथम 1870 में शराब उत्पादन पर आबकारी टैक्स लगा दिया तथा बाद में शराब की दुकानें खुलवा दी। 1905–06 भारतीय आबकारी कमीशन की सिफारिश पर देश में शराब उत्पादन करने के लिए कारखानों की स्थापना की गई। अंग्रेजों को देश के लोगों के स्वास्थ्य व आर्थिक बदहाली से कोई मतलब नहीं था लेकिन उनकी आबकारी नीति को आजादी के बाद भारत सरकार ने ज्यों का त्यों जारी रखा। शराब व अन्य मादक द्रव्यों की दुकानें अंग्रेजों की देन है जो आज तक बदस्तूर जारी हैं।

इसी प्रकार भांग का सम्बन्ध हिन्दुओं के प्रमुख देवता शिव शंकर तथा उनके भक्तों से जोड़ा जाता है। ऐसा माना जाता है कि शिव भांग का सेवन कर नृत्य (तांडव) करते थे तथा इस तर्क को आधार मानकर कथित साधु–संत भांग का प्रयोग करते हैं। युवा वर्ग इनसे प्रभावित होकर इनकी जटाओं, अर्द्धनग्न भंगेड़ी तथाकथित साधु–संतों को अपना आदर्श समझ बैठे। भारत में होली के उत्सव पर भांयगुक्त दूध का सामूहिक सेवन किया जाता है इसी प्रकार महाशिवरात्रि के अवसर पर भगवान शिव को भांग का भोग लगाया जाता है। ऐसी धारण है कि भांग शिवजी का प्रिय पसंदीदा पेय है। मादक द्रव्यों का सम्बन्ध किसी देवी–देवताओं के साथ जोड़ने पर कई लोगों का मत है कि धार्मिक ग्रन्थों में वर्णन न होते हुए भी भांग या किसी अन्य प्रकार के नशे को समाज सम्मत बनाने के लिए नशेड़ियों द्वारा ये बाते मनगढ़न्त तरीके से जोड़ी गई है।[4]

मादक द्रव्य के प्रकारः–

1. निकोटीनः–

एक साधारण सामान्य प्रचलित व स्वीकृत मादक पदार्थ है। सामान्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका प्रयोग आमतौर पर अधिकांश व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। निकोटीन निर्मित बीड़ी, सिगरेट, सिगार, तंबाकू, पान, खैनी, गुटका, सुपारी, सुंघनी आदि पदार्थ सम्मिलित किये जाते हैं। ये उत्पाद सम्पूर्ण विश्वभर में प्राचीन काल से प्रयोग किये जाते रहे है।

इन सब में तंबाकू का ही प्रयोग अलग–अलग तरीकों से किया जाता है। तम्बाकू को धूम्रपान, मुँह में चबाकर, नाक से सूँघकर प्रयोग किया जाता है। ज्यादातर निकोटीन के अन्य उत्पाद तम्बाकू से बनाये जाते हैं। भारत में बीड़ी, सिगरेट व हुक्का आदि तम्बाकू सेवन के माध्यम हैं। इनके प्रयोग को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है तथा पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं के द्वारा भी इसका सेवन किया

जाता है। वर्तमान में सिगरेट के विकल्प के तौर पर ई–सिगरेट का चलन शुरू हुआ है। ई–सिगरेट में वाष्पीकृत निकोटीन का प्रयोग किया जाता है। इसमें निकोटीन की मात्रा भी कम होती है लेकिन यह भी सिगरेट की लत से छुटकारा दिलाने में बहुत ज्यादा कारगर नहीं है।

आम तौर पर इनका प्रयोग सुस्ती दूर करने के लिए, शरीर में उत्तेजना बनाये रखने तथा नींद को दूर भागने के लिए किया जाता है। इसका कारण यह कि निकोटीन में कुछ ऐसे तत्व है जो आलस्य को दूर करते हैं। इसलिए इसका प्रयोग रात को जागने, आलस्य दूर करने में किया जाता है। इनकी एक विशेषता यह होती है इसमें आदत बनाने की क्षमता होती है।

सामान्य सिथति में यह अत्यधिक नुकसानदायक नहीं है लेकिन आदत बनने के बाद निकोटीन के निरंतर प्रयोग से अनेक प्रकार के रोगों की शुरूआत हो जाती है। धुम्रपान से हृदय, फेफड़े, श्वसन सम्बन्धी अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इससे फेफड़ों में अस्थमा व एलर्जी होने की सम्भावना बढ़ जाती है। श्वास लेने में मुश्किल होने लगती है। कैंसर जैसी भयंकर बीमारी का कारण भी निकोटीन बनता है।

2. अल्कोहल

अल्कोहल मूल रूप से अरबी भाषा का शब्द है जो दो शब्दों अल+कुहल से बना है। यह स्वाद में कड़वा व तीव्र ज्वलनशील पदार्थ है। हिन्दी में इसके लिए मद्य, मदरा, सुरा, शराब आदि शब्दों को प्रयोग में लाया जाता है। अल्कोहाल की अलग–अलग मात्रा व निर्माण प्रक्रिया के आधार पर उसे अनेक नामों विस्की, रम, वोदका, बीयर, वाइन, ब्रान्डी आदि के नाम से जाना जाता है। शराब के सेवन से शरीर में अल्कोहल की मात्रा बढ़ जाती है जिससे शारीरिक व मानसिक स्थिति सामान्य नहीं रहती। वह मस्तिष्क को निश्चेत कर देती है, सोचने–समझने की क्षमता प्रभावित होती है। इसलिए व्यक्ति खुद का नियंत्रण नहीं रख पाता। पैर लड़खड़ाने लगते हैं तथा वाणी अस्थिर हो जाती है। अधिक मात्रा में इसका सेवन करने से उल्टी होना, लिवर प्रभावित होना आदि प्रभाव पड़ते है। कई ईथेनाल के बदले मिथेनॉल अल्कोहल बन जाता है तो शराब जहरीली हो जाती है तथा पीने वालों की मृत्यु हो जाती है। आदिकाल से ही शराब का विश्व में प्रचलन रहा है। शराब को एक आनन्दित

करने वाली वस्तु के रूप में प्रचारित किया है। इस आनन्द की अनुभूति को पुनः प्राप्त करने के लिए लोग इसका बार–बार सेवन प्रयोग करते हैं। पश्चिम देशों में शराब को सामान्य पेय माना जाता है।

3. शामक या शांतिदायक या अवसादक मादक द्रव्य

इन्हें मनःप्रभावी पदार्थ (साइकोट्रोपिक सब्सटांसेस) भी कहा जाता है। ये दर्द को कम करने वाले मादक पदार्थ हैं। ये केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र को सुस्त कर नींद उत्पन्न करते हैं। इसलिए ये शरीर में शांति व आराम प्रदान करते हैं। इसके अन्तर्गत बहुत सारी दर्द निवारक गोलियां और नींद उत्पन्न करने वाली दवाओं को शामिल करते हैं जैसे बारबीच्युरेट, ट्रेक्किलाइजर, एनालजेसिस, एल्प्राजोलम आदि। ये ज्यादातर टेबलेट या कैप्सूल के रूप में होते हैं। सीरिंज का भी प्रयोग होता है। इन मादक पदार्थों का प्रयोग चिकित्सा क्षेत्र में किसी शल्य चिकित्सक से पूर्व व बाद में, किसी मानसिक रोग, अनिद्रा के रोगी को बेहोशी या आराम पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है। मानसिक रूप से परेशान/विक्षिप्त व्यक्तियों के विचारों को कम करने के लिए, उनके मन को शिथिल करने के लिए अवसादक द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है। इनकी कम मात्रा सुस्ती लाती है तथा उच्च रक्तचाप घड़कन व श्वसन को नियंत्रित करती है। लेकिन इसकी अधिक मात्रा नुकसान पहुँचाने वाली है। इससे मनुष्य की चेतना समाप्त होने लगती है, सोचने–समझने, विचारने की शक्ति क्षीण होती जाती है। आजकल अनिद्रा की भयंकर समस्या है इसलिए नींद उत्पन्न करने के लिए तथा चिंता मुक्त करने के लिए इन मादक द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है। इनके निरंतर प्रयोग से असर कम हो जाता है तथा मात्रा बढ़ाने पर ही असर होता है। मात्रा बढ़ाने पर दर्द, उल्टी, बेहोशी, मृत्यु की स्थिति बन जाती है।

4. उत्तेजक मादक द्रव्य

इन मादक द्रव्यों का प्रभाव शामक पदार्थों के विपरीत होता है जहाँ अवदायक मादक द्रव्य शरीर को शांत करने का कार्य करते हैं, वहीं उत्तेजक मादक द्रव्य व्यक्ति के केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र और दिमाग को उत्तेजित करने का कार्य करते हैं। ये मादक पदार्थ थकावट व उदासीनता को दूर भगाकर शरीर को चुस्त रखने का कार्य करते हैं। रात या दिन में जागते रहने के लिए तथा कामेच्छा की तीव्रता को बढ़ाने के लिए इनका सेवन करते हैं।

इस प्रकार के उत्तेजक मादक पदार्थों की अनेक श्रेणियां हैं इसमें से कुछ में कम उत्तेजक पदार्थ होते हैं। जैसे–चाय, काफी, कोल्ड ड्रिंक आदि इनका प्रयोग सामान्य रूप से भारत व विश्व में किया जाता है। एम्फीटामिन विश्व का सर्वाधिक उत्तेजक मादक पदार्थ है।

5. स्वापक औषधियां (नारकोटिक्स)

नारकोटिक्स ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है शिथिल या शक्तिहीन करना। इन्हें निश्चेतक औषधियाँ भी कहा जाता है। ये प्राकृतिक रूप से पौधे के रूप में पाये जाने वाले मादक द्रव्य हैं। इसमें मुख्य रूप से अफीम एवं कैनाबिस होती है। इन दोनो पौधों से प्राकृतिक व रासायनिक क्रिया द्वारा बहुत सारे मादक द्रव्य तैयार किये जाते हैं। इन उत्पादों में चरस, गांजा, भांग, मार्फीन, हेरोइन, स्मैक, कोकीन, जैसे अनेक मादक उत्पाद पौधे के किसी भाग या इनको संश्लेषित कर तैयार किये जाते हैं।

चिकित्सकीय क्षेत्र में इनका प्रयोग दर्द निवारक औषधि के रूप में होता है लेकिन बिना चिकित्सक की सलाह या अधिक मात्रा व्यक्ति को व्यसनी बना देती है। चिकित्सकीय प्रयोजन के अलावा इनका प्रयोग शक्ति का अनुभव करने के लिए किया जाता है। इनसे आनन्द की अनुभूति होती है लेकिन इनके दुष्प्रभाव काफी खतरनाक होते हैं। एकबार आदत बनने के बाद इनसे निजात पाना काफी मुश्किल है क्योंकि शरीर में एन्डोरफिन्स रसायन बनना बन्द हो जाता है जिनकी पूर्ति नारकोटिक्स दवाइयों द्वारा ही सम्भव है। इससे निर्भरता व दवा की मात्रा बढ़ती है। इनका व्यसनी व्यक्ति अगर नियमित सेवन नहीं कर पाता है तो शरीर में कम्पन होना, पसीना आना, नाक व आँख में पानी बहना, सांसो की गति धीमी होना, शक्तिहीन होना, दस्त लगना आदि प्रतिक्रिया प्रभाव दिखाई देने लगते हैं। स्वापक औषधि सेवन करने वाले का जीवन अस्त–व्यक्त हो जाता है तथा अत्यधिक सेवन से मृत्यु तक हो सकती है। इन्हें सूंघकर, चिलम, सीरिंज आदि के माध्यम से उपयोग किये जाते हैं।

6. भ्रांतिजनक उत्पाद

ये अलग ही प्रकार के मादक द्रव्य हैं। जैसा की नाम से स्पष्ट होता है कि इनके प्रयोग द्वारा सेवनकर्ता भ्रमित हो जाता है तथा उसे वास्तविकता का ज्ञान नहीं रहता है। सेवनकर्ता सपनों के संसार में रहता है। एक अलग ही संसार की रचना कर लेता है उसमें इस दुनिया की वास्तविकता नहीं होती। इनके सेवन के बाद समय व स्थान का भेद मिट जाता है। अत्यधिक सेवन से व्यक्ति पागल भी हो सकता है।

तम्बाकू–

यह आम तौर पर सर्वाधिक प्रयोग होने वाला मादक उत्पाद है। इसका प्रयोग सामूहिक रूप से या एक व्यक्ति के द्वारा किया जाता है। इसका प्रयोग अधिक होने के कारण इसे सामाजिक समस्या या विचलनकारी कृत्य नहीं माना जाता है। इतना अवश्य है कि अगर एक सीमा से ज्यादा इसका उपयोग किया जाता है उसे सामान्य नहीं माना जाता।

तम्बाकू का ज्यादा ज्यादातर धूम्रपान के रूप में सेवन किया जाता है। धूम्रपान करने के अनेक माध्यम है। गांवों में इनको ग्रहण करने का सबसे प्रचलित माध्यम हुक्का है। हुक्का के माध्यम से इसे सामूहिक प्रयोग किया जाता है। तम्बाकू को चिलम में भरकर पिया जाता है। इसके अन्य माध्यमों में बीड़ी, सिगरेट आते हैं। इन दोनो का प्रयोग भी बहुतायत में किया जाता है। तम्बाकू सेवन का एक प्रतिमान है जिसमें सिगरेट सेवन युवा वर्ग में ज्यादा प्रचलित है तो बीड़ी का प्रयोग प्रौढ़ों में होता है तथा वृद्धों में हुक्का का प्रयोग अधिक होता है। धूम्रपान के अलावा तम्बाकू को मुँह के माध्यम से चबाया जाता है।

यह एक कानूनी और सामाजिक रूप में स्वीकृत होने के कारण प्रतिबंधित नहीं है। कम मात्रा में इनके सेवन से स्वास्थ्य समस्याओं का सामना नहीं के बराबर होता है। लेकिन अधिक मात्रा में सेवन स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालने वाला होता है तथा श्वसन सम्बन्धी रोगों का कारण बनता है। पिछले कुछ सालों में तम्बाकू के प्रयोग करने के माध्यमों में परिवर्तन हुआ है। अब गुटका, पान, खैनी आदि के रूप में इनका प्रयोग होने लगा है जो मुँह के कैंसर, फेफड़ों व श्वसन अंगो को खतरनाक रूप से प्रभावित करते हैं।[5]

मदिरा

शराब, मद्य, सुरा, एल्कोहॉल आदि इसी के नाम हैं। शराब के बारे में कहा जाता है कि ''जो डुबा है बातलों के बन्द पानी में, वो कभी न उभरेगा जिंदगानी में।'' तम्बाकू उत्पादों के मादक द्रव्यों में मदिरा का प्रयोग सर्वाधिक मात्रा में होता है। इसका उपयोग प्राचीन समय से सभी समाजों में किया जाता रहा है। भारत में इनका प्रयोग कुछ जातियों के लिए स्वीकृत तो कुछ जातियों के लिए प्रतिबन्धित था। महात्मा गांधी का कहना था कि यह शरीर व आत्मा दोनो का नाश करती है। शराब दो प्रकार से आसवन व किण्वन की प्रक्रिया द्वारा तैयार की जाती है। गांवों में इसे सेवनकर्ता द्वारा खुद ही तैयार किया जाता है। इसे हथकढ़ शराब के नाम से जाना जाता है। विभिन्न फलो, गन्ना, गुड़ चावल, जौ, मक्का, आलू, महुआ आदि से यह तैयार की जाती है।[6]

निष्कर्ष

प्राप्त निष्कर्षों व विश्लेषणों से यह ज्ञात होता है कि समाज में मद्यपानकी समस्या कोई नहीं है। प्राचीन काल से ही इसका प्रयोग लोग करते आये हैं और बहुत पहले से समाज इसके प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाता रहा है, किन्तु वर्तमान स्थिति चिंताजनक है और हमें इससे बाहर निकलना होगा, जिससे एक स्वस्थ समाज की स्थापना हो सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, अनिल (2011) : मादक औषधियों, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, पृ.सं. 17
2. दीक्षित, डा. डी.के. (2011) : विद्यार्थी और मादक पदार्थ, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर पृ.सं. 06
3. एडविड आर.ए. सालिगमैन और एल्विल एस.जे. (1967) : इनसाईक्लोपीडिया ऑफ सोशल साईन्सेज, मैकमिलन पब्लिशर्स, लंदन, पृ.सं. 620
4. रॉय शिवानी एवं रीजवी, एस.एस.एच. (1986) : निकोटीन वॉटर टू हेरोइन, बी. आर. पब्लिशिंग, नई दिल्ली, पृ.सं. 07
5. निहालिया, लवली (2017) : नशे की लत से बिखरते युवा, ब्लू रोज पब्लिकेशन्स पृ.सं. 11
6. कपूर, त्रिभुवन (1986), ड्रग एपीडेमिक एमंग इण्डियन यूथ, मित्तल पब्लिकेशन, दिल्ली पृ.सं. 93